मार्कफिल्ड हायब्रीड सीड्स प्रा. लि.
बी-३, अतिरिक्त औद्योगिक वसाहत, जालना, कस्टमर केअर मो. न. 9405782668

पिक:- पालक

वाण :- **ऑल ग्रीन, अर्का अनुपमा.**

जमीन :- पालकाचे पीक विविध प्रकारच्या जमिनीत घेता येते. खारवट जमिनीतही पालकाचे पीक चांगले येऊ शकते. ज्या खारवट जमिनीत इतर पिके येऊ शकत नाहीत तेथे पालक घेता येते.

हवामान :- पालक हे कमी दिवसांत तयार होणारे हिवाळी पीक असल्यामुळे महाराष्ट्रात कडक उन्हाळयाचे एक दोन महिने वगळून वर्षभर पालकाची लागवड करता येते. थंड हवामानात पालकाचे उत्पादन जास्त येऊन दर्जा चांगला राहतो. तर तापमान वाढल्यास पीक लवकर फूलो-यावर येते आणि दर्जा खालावतो.

पेरणीची वेळ:- महाराष्ट्रातील हवामानात पालकाची लागवड जवळ जवळ वर्षभर करता येते. खरीप हंगामातील लागवड जून–जूलैमध्ये आणि रब्बी हंगामातील लागवड सप्टेबर आक्टोबरमध्ये केली जाते. भाजीचा सतत पुरवठा होण्यासाठी 10 ते 15 दिवसांच्या अंतराने हप्त्या हप्त्याने बियांची पेरणी करावी.

बियाणे:- एक हेक्टर लागवडीसाठी 20-25 किलो बियाणे लागते.

पेरणीची पद्धत :- जमिनीच्या मगदुरानुसार योग्य आकाराचे सपाट वाफे तयार करून बी फेकून पेरावे आणि नंतर बी मातीत मिसळून हलके पाणी द्यावे. जमीन भारी असल्यास वापसा आल्यावर पेरणी करावी. बी ओळीत पेरतांना दोन ओळीत 25-30 सेंटीमीटर अंतर ठेवावे.

खते आणि पाणी व्यवस्थापन:- लागवडीपूर्वी 10-12 टन शेणखत प्रति हेक्टरी व 40:40:40 किलो नत्र: स्फुरद: पालाश प्रति हेक्टरी, लागवडींनंतर एक महिन्याने 40 किलो नत्र खताची मात्रा द्यावी.

रोग व कीड नियंत्रण :
खतासोबत फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकरी किंवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकरी या दराने वापरल्यास सुमारे 21 दिवस मावा व तुडतुडे पासून चांगले संरक्षण मिळते.

क्र.	रोग/ कीट	नियंत्रण	मात्रा प्रति लि पाण्यात
1	मावा	सुपर कॉन्फिडॉर	01 मिली लि. प्रति 3 लि
2	पाने कुरतडणारी अळी,	प्रोफेनोफॉस	01 मि. लि प्रति लि
3	मर रोग	थायरम	02 ग्रॅ प्रति लि

पाणी व्यवस्थापन:- खरीप हंगामात पावसाच्या प्रमाणानुसार पाणी द्यावे. हिवाळयात पालकाच्या पिकाला 10 ते 12 दिवसांच्या अंतराने पाणी द्यावे. काढणीच्या 2-3 दिवस आधी पिकाला पाणी द्यावे. त्यामुळे पाने टवटवीत राहून पिकाचा दर्जा सुधारतो.

पिक काढणीचा तपशील :- पेरणी नंतर सुमारे 1 महिन्याने पालक कापणीला तयार होते. पालकाची पूर्ण वाढलेली हिरवी कोवळी पाने 15 ते 30 सेंटीमीटर उंचीची झाल्यावर पानांच्या देठाचा जमिनीपासून 5 ते 7.5 सेमी भाग ठेवून वरील भाग खुडून अथवा कापून घ्यावा. आणि पानांच्या जूडया बाधाव्यात. त्यानंतर 15 दिवसाच्या अंतराने जातीनुसार 3-4 किंवा त्यापेक्षा जास्त खुडे करावेत.

टीप: वरील दिलेली माहिती हि आमच्या संशोधण केंद्रात घेतलेल्या चाचण्या वरून दिलेली आहे. यात जमीन, भोगोलिक हवामान, पिकाची नियोजन पद्धती इत्यादी कारणामुळे या मध्ये बदल होऊ शकतो.

मार्कफिल्ड हायब्रीड सीड्स प्रा. लि.

बी-३, अतिरिक्त औद्योगिक वसाहत, जालना, कस्टमर केअर मो. न. 9405782668

पालक

किस्में:- ऑल ग्रीन, अर्का अनुपमा, ज्योति.

जलवायु:- पालक की सफलतापूर्वक खेती के लिए ठण्डी जलवायु की आवश्यकता होती है। ठण्ड में पालक की पत्तियों का बढ़वार अधिक होता है जबकि तापमान अधिक होने पर इसकी बढ़वार रूक जाती है, इसलिए पालक की खेती मुख्यत: शीतकाल में करना अधिक लाभकर होता है। परन्तु पालक की खेती मध्यम जलवायु में वर्षभर की जा सकती है

भूमि का चयन:- जैविक खाद से भरपूर उपजाऊ दोमट मिट्टी पालक की खेती के लिए उपयुक्त होती है| अम्लीय मिट्टी में इसकी वृद्धि धीमी हो जाती है| अत: अच्छी उपज के लिए मृदा का पी एच मान 6.0 से 7.0 के बीच होना चाहिए|

खेत की तैयारी :- बोआई से पहले भूमि की 2 से 3 बार जुताई करके समतल बना लेना चाहिए| खेत में जल निकासी का उचित प्रबंध खेत तैयार करते समय ही कर लेना चाहिए, ताकि वर्षा होने पर खेत में जल का जमाव न हो|

बोने का समय:- पालक की बुवाई करते समय वातावरण का विशेष ध्यान देना चाहिए। उपयुक्त वातावरण में पालक की बुवाई वर्ष भर की जा सकती है। पालक की फसल से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए बुवाई जनवरी-फरवरी, जून-जुलाई और सितम्बर-अक्टूबर में की जा सकती है, जिससे पालक की अच्छी पैदावार प्राप्त होती है।

बीज की मात्रा:- एक हेक्टेयर में 30 से 40 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त होता है.

बुवाई विधि:- सामान्यतया पालक की बुवाई छिटकवां विधि से की जाती है। परन्तु पालक की खेती से अधिक उपज प्राप्त करने के लिए इसकी बुवाई पंक्तियों में करनी चाहिए। पालक की पंक्ति में बुवाई करने के लिए पंक्तियों व पौधों की आपस में दूरी क्रमश: 25 से 30 सेन्टीमीटर और 20 सेन्टीमीटर रखना चाहिए। पालक के बीज को 2 से 3 सेन्टीमीटर की गहराई पर बोना चाहिए, इससे अधिक गहरी बुवाई नहीं करनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक :- गोबर की सड़ी हुई खाद 20 टन प्रति हेक्टेयर या 8 टन वर्मी कम्पोष्ट प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है| खाद की पूरी मात्रा अंतिम जुताई के समय खेत में समान रूप से मिट्टी में मिला देना चाहिए| इसके आलावा 40 किलोग्राम नत्रजन 40 किलोग्राम फास्फोरस तथा 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है| नेत्रजन की आधी मात्र फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा अंतिम जुताई के समय खेत में मिट्टी में मिलायें एव नेत्रजन की शेष मात्रा को तीन भागों में बाँटकर प्रत्येक कटाई के बाद फसल में छिड़काव करें, इससे पत्तियों की बढ़वार अच्छी होती है|

रोग और कीट नियंत्रण :- खाद के साथ फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकडं अथवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकडं इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसानेवाले किट से संरक्षण मिलता है.

क्र.	रोग/ कीट	नियंत्रण	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	पावडरी मिल्ड्यू	सल्फर	02 ग्राम प्रति ली
2	जड़ सड़न (root rot)	बाविस्टिन	02 ग्राम प्रति ली
3	माहु	सुपर कॉन्फिडॉर	04 मि. ली प्रति 10 ली
4	पत्ति सुरंगी किट	सुपर कॉन्फिडॉर	04 मि. ली प्रति 10 ली

सिंचाई प्रबंधन:- पालक बीज के अंकुरण के लिए नमी अत्यंत आवश्यक है| नमी की कमी महसूस होने पर खेत की जुताई से पूर्व सिंचाई अवश्य करें| बीज अंकुरण के बाद गर्म मौसम में हर सप्ताह सिंचाई की आवश्यकता होती है और शरद मौसम में 10 से 12 दिन पर सिंचाई करते रहना चाहिए|

खरपतवार नियंत्रण:- बुवाई के 20 से 25 दिन बाद निराई गुड़ाई करनी चाहिए| खरपतवारनाशी का भी प्रयोग किया जा सकता है|

कटाई;- पालक के बीज बोने के लागभग एक महिने बाद पालक काटणे योग्य हो जाता हें. जब पत्तियों की लम्बाई 15 से 30 सेमी. लम्बी हो जाएं। पालक की पत्तियों की कटाई उसकी कोमल और रसीली अवस्था में ही करनी चाहिए। इस प्रकार से पालक की एक फसल से लगभग 5-6 बार कटाई किया जा सकता है। पालक के फसल की कटाई के तुरन्त बाद इसे बाजार भेजना सुनिश्चित करें।

टिपण्णी :- उपरोक्त सभी जाणकारीया हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है. भिन्न स्थानो पर भिन्न मौसम, भूमी प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी मे बदलाव आ सकता है.

Markfield Hybrid Seeds Pvt. Ltd.
B-3, Additional Industrial Colony, Jalna, Customer Care Mo No. 9405782668

Spinach

Varieties:- All Green, Arka Anupama, Jyoti.

Climate:- Cold climate is required for successful cultivation of spinach. Spinach leaves grow more in cold, whereas its growth stops when the temperature is high, so spinach cultivation is mainly more profitable in winter. But spinach can be cultivated throughout the year in moderate climate.

Selection of land:- Fertile loamy soil rich in organic manure is suitable for spinach cultivation. Its growth slows down in acidic soil. Therefore, for good yield, the pH value of the soil should be between 6.0 to 7.0.

Field preparation:- Before sowing, the land should be plowed 2 to 3 times and made flat. Proper arrangement of drainage in the field should be done while preparing the field, so that there is no water logging in the field when it rains.

Sowing time:- While sowing spinach, special attention should be paid to the environment. In suitable environment, spinach can be sown throughout the year. To get good production from spinach crop, sowing can be done in January-February, June-July and September-October, which gives good yield of spinach.

Quantity of seeds:- 30 to 40 kg of seeds are sufficient in one hectare.

Sowing method:- Generally, spinach is sown by broadcasting method. But to get more yield from spinach cultivation, it should be sown in rows. For sowing spinach in rows, the distance between rows and plants should be kept 25 to 30 cm and 20 cm respectively. Spinach seeds should be sown at a depth of 2 to 3 cm, sowing should not be done deeper than this.

Manure and Fertilizer:- 20 tons of rotten cow dung manure per hectare or 8 tons of vermicompost per hectare is required. The entire quantity of manure should be mixed evenly in the soil at the time of final ploughing. Besides this, 40 kg nitrogen, 40 kg phosphorus and 40 kg potash are required per hectare. Mix half the quantity of nitrogen with phosphorus and full quantity of potash in the soil at the time of final ploughing and divide the remaining quantity of nitrogen into three parts and spray it on the crop after each harvesting, this helps in good growth of leaves.

Disease and pest control :- Using Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre along with manure provides protection from sap sucking pests for 21 days.

No.	Disease/ Pest	Control	Amount Per Liter of Water
1	Powdery Mildew	Sulphur	02 gm Per Liter
2	Root rot	Bavistin	02 gm Per Liter
3	Aphids	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters
4	Leaf minor	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters

Irrigation Management:- Moisture is very important for the germination of spinach seeds. If there is lack of moisture, irrigation must be done before ploughing the field. After seed germination, irrigation is required every week in hot weather and in autumn season, irrigation should be done every 10 to 12 days.
Weed Control:- Weeding should be done 20 to 25 days after sowing. Herbicides can also be used.

Harvesting:- Spinach becomes ready for harvesting after about a month of sowing the seeds. When the length of the leaves becomes 15 to 30 cm. Spinach leaves should be harvested in their soft and juicy state. In this way, spinach can be harvested 5-6 times from one crop. Make sure to send the spinach crop to the market immediately after harvesting.

Note: - All the above information is based on the experiments conducted at our research center. The above information may change due to different weather, soil type and season at different places.

માર્કફિલ્ડ હાઇબ્રિડ સીડ્સ પ્રા. લિ.
બી-૩, વધારાની ઔદ્યોગિક વસાહત, જાલના, કસ્ટમર કેર મો. નં. ૯૪૦૫૭૮૨૬૬૮

પાલક

જાતો:- ઓલ ગ્રીન, અર્કા અનુપમા.

આબોહવા:- પાલકની સફળ ખેતી માટે ઠંડી આબોહવા જરૂરી છે. પાલકના પાન ઠંડા હવામાનમાં વધુ ઉગે છે, જ્યારે તાપમાન વધારે હોય ત્યારે તેનો વિકાસ અટકી જાય છે, તેથી પાલકની ખેતી મુખ્યત્વે શિયાળામાં વધુ નફાકારક છે. પરંતુ મધ્યમ આબોહવામાં આખા વર્ષ દરમિયાન પાલકની ખેતી કરી શકાય છે.

જમીનની પસંદગી:- કાર્બનિક ખાતરથી ભરપૂર ફળદ્રુપ લોમી જમીન પાલકની ખેતી માટે યોગ્ય છે. એસિડિક જમીનમાં તેનો વિકાસ ધીમો પડી જાય છે. તેથી, સારા ઉપજ માટે, જમીનનું pH મૂલ્ય ૬.૦ થી ૭.૦ ની વચ્ચે હોવું જોઈએ.

ખેતરની તૈયારી:- વાવણી પહેલાં, જમીનને ૨ થી ૩ વખત ખેડવી જોઈએ અને સપાટ બનાવવી જોઈએ. ખેતર તૈયાર કરતી વખતે ખેતરમાં ડ્રેનેજની યોગ્ય વ્યવસ્થા કરવી જોઈએ, જેથી વરસાદ પડે ત્યારે ખેતરમાં પાણી ભરાય નહીં.

વાવણીનો સમય:- પાલક વાવતી વખતે, પર્યાવરણ પર ખાસ ધ્યાન આપવું જોઈએ. યોગ્ય વાતાવરણમાં, પાલક આખા વર્ષ દરમિયાન વાવી શકાય છે. પાલકના પાકમાંથી સારું ઉત્પાદન મેળવવા માટે, જાન્યુઆરી-ફેબ્રુઆરી, જૂન-જુલાઈ અને સપ્ટેમ્બર-ઓક્ટોબરમાં વાવણી કરી શકાય છે, જેનાથી પાલકનું સારું ઉત્પાદન મળે છે.

બીજનો જથ્થો:- એક હેક્ટરમાં 30 થી 40 કિલો બીજ પૂરતા હોય છે.

વાવણી પદ્ધતિ:- સામાન્ય રીતે પાલકનું વાવેતર છાણ પદ્ધતિ દ્વારા કરવામાં આવે છે. પરંતુ પાલકની ખેતીમાંથી વધુ ઉત્પાદન મેળવવા માટે, તેને હરોળમાં વાવવું જોઈએ. હરોળમાં પાલક વાવવા માટે, હરોળ અને છોડ વચ્ચેનું અંતર અનુક્રમે 25 થી 30 સેમી અને 20 સેમી રાખવું જોઈએ. પાલકના બીજ 2 થી 3 સેમીની ઊંડાઈએ વાવવા જોઈએ, વાવણી આનાથી વધુ ઊંડાઈએ ન કરવી જોઈએ.

ખાતર અને ખાતર:- પ્રતિ હેક્ટર 20 ટન સડેલું ગાયનું છાણ ખાતર અથવા પ્રતિ હેક્ટર 8 ટન વર્મીકમ્પોસ્ટ જરૂરી છે. અંતિમ ખેડાણ સમયે ખાતરનો સંપૂર્ણ જથ્થો જમીનમાં સમાનરૂપે ભેળવવો જોઈએ. આ ઉપરાંત, પ્રતિ હેક્ટર ૪૦ કિલો નાઇટ્રોજન, ૪૦ કિલો ફોસ્ફરસ અને ૪૦ કિલો પોટાશની જરૂર પડે છે. અંતિમ ખેડાણ સમયે જમીનમાં અડધી માત્રામાં નાઇટ્રોજન ફોસ્ફરસ અને સંપૂર્ણ માત્રામાં પોટાશ ભેળવીને બાકીના નાઇટ્રોજનને ત્રણ ભાગમાં વહેંચો અને દરેક લણણી પછી પાક પર છંટકાવ કરો, આનાથી પાંદડાઓનો સારો વિકાસ થાય છે.

રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ રાસાયણિક દવાનો ડોઝ અને સમય:- ફર્ટેરા (ડુપોન્ડ) ૪ કિલો પ્રતિ એકર અથવા વર્ટીકો (સિંજેન્ટા) ૨.૫ કિલો પ્રતિ એકર ખાતર સાથે ઉપયોગ કરવાથી ૨૧ દિવસ સુધી રસ ચૂસનારા જીવાતોથી રક્ષણ મળે છે.

No.	Disease/ Pest	Control	Amount Per Liter of Water
1	Powdery Mildew	Sulphur	02 gm Per Liter
2	Root rot	Bavistin	02 gm Per Liter
3	Aphids	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters
4	Leaf minor	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters

સિંચાઈ વ્યવસ્થાપન:- પાલકના બીજના અંકુરણ માટે ભેજ ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે. જો ભેજનો અભાવ હોય, તો ખેતરમાં ખેડાણ કરતા પહેલા સિંચાઈ કરવી જોઈએ. બીજ અંકુરણ પછી, ગરમ હવામાનમાં દર અઠવાડિયે સિંચાઈ જરૂરી છે અને પાનખર ઋતુમાં, દર ૧૦ થી ૧૨ દિવસે સિંચાઈ કરવી જોઈએ.

નીંદણ નિયંત્રણ:- વાવણી પછી ૨૦ થી ૨૫ દિવસે નિંદણ કરવું જોઈએ. હર્બિસાઇડ્સનો પણ ઉપયોગ કરી શકાય છે.

લણણી:- બીજ વાવ્યાના લગભગ એક મહિના પછી પાલક લણણી માટે તૈયાર થાય છે. જ્યારે પાંદડાની લંબાઈ ૧૫ થી ૩૦ સે.મી. થઈ જાય છે. પાલકના પાંદડા નરમ અને રસદાર સ્થિતિમાં કાપવા જોઈએ. આ રીતે, એક પાકમાંથી 5-6 વખત પાલકની લણણી કરી શકાય છે. લણણી પછી તરત જ પાલકના પાકને બજારમાં મોકલવાનું ભૂલશો નહીં.

નોંધ: - ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગો પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી વિવિધ સ્થળોએ અલગ અલગ હવામાન, માટીના પ્રકાર અને ઋતુને કારણે બદલાઈ શકે છે.

మార్క్‌ఫీల్డ్ హైబ్రిడ్ సీడ్స్ ప్రైవేట్ లిమిటెడ్
B-3, అదనపు ఇండస్ట్రియల్ కాలనీ, జల్నా, కస్టమర్ కేర్ మో నం. 9405782668

పాలకూర

రకాలు:- ఆల్ గ్రీన్, అర్కా అనుపమ.

వాతావరణ:- పాలకూర విజయవంతంగా సాగు చేయడానికి చల్లని వాతావరణం అవసరం. పాలకూర ఆకులు చలిలో ఎక్కువగా పెరుగుతాయి, అయితే ఉష్ణోగ్రత ఎక్కువగా ఉన్నప్పుడు దాని పెరుగుదల ఆగిపోతుంది, కాబట్టి పాలకూర సాగు ప్రధానంగా శీతాకాలంలో ఎక్కువ లాభదాయకంగా ఉంటుంది. కానీ పాలకూరను ఏడాది పొడవునా మితమైన వాతావరణంలో పండించవచ్చు.

భూమి ఎంపిక:- సేంద్రీయ ఎరువుతో కూడిన సారవంతమైన లోమీ నేల పాలకూర సాగుకు అనుకూలంగా ఉంటుంది. ఆమ్ల నేలలో దాని పెరుగుదల మందగిస్తుంది. అందువల్ల, మంచి దిగుబడి కోసం, నేల యొక్క pH విలువ 6.0 నుండి 7.0 మధ్య ఉండాలి.

పొల తయారీ:- విత్తే ముందు, భూమిని 2 నుండి 3 సార్లు దున్నాలి మరియు చదును చేయాలి. పొలాన్ని సిద్ధం చేసేటప్పుడు పొలంలో సరైన డ్రైనేజీని ఏర్పాటు చేయాలి, తద్వారా వర్షం పడినప్పుడు పొలంలో నీరు నిలిచిపోదు.

విత్తే సమయం: - బచ్చలికూరను విత్తేటప్పుడు, పర్యావరణంపై ప్రత్యేక శ్రద్ధ వహించాలి. అనుకూలమైన వాతావరణంలో, బచ్చలికూరను ఏడాది పొడవునా విత్తుకోవచ్చు. బచ్చలికూర పంట నుండి మంచి దిగుబడి పొందడానికి, జనవరి-ఫిబ్రవరి, జూన్-జూలై మరియు సెప్టెంబర్-అక్టోబర్ లలో విత్తుకోవచ్చు, ఇది బచ్చలికూర మంచి దిగుబడిని ఇస్తుంది.

విత్తనాల పరిమాణం: - ఒక హెక్టారుకు 30 నుండి 40 కిలోల విత్తనాలు సరిపోతాయి.

విత్తే పద్ధతి: - సాధారణంగా, బచ్చలికూరను ప్రసార పద్ధతి ద్వారా విత్తుతారు. కానీ బచ్చలికూర సాగు నుండి ఎక్కువ దిగుబడి పొందడానికి, దానిని వరుసలలో విత్తాలి. బచ్చలికూరను వరుసలలో విత్తడానికి, వరుసలు మరియు మొక్కల మధ్య దూరం వరుసగా 25 నుండి 30 సెం.మీ మరియు 20 సెం.మీ ఉండాలి. బచ్చలికూర విత్తనాలను 2 నుండి 3 సెం.మీ లోతులో విత్తాలి, దీని కంటే లోతుగా విత్తకూడదు.

ఎరువు మరియు ఎరువులు: - హెక్టారుకు 20 టన్నుల కుళ్ళిన ఆవు పేడ ఎరువు లేదా హెక్టారుకు 8 టన్నుల వర్మి కంపోస్ట్ అవసరం. చివరి దున్నేటప్పుడు మొత్తం ఎరువును నేలలో సమానంగా కలపాలి. దీనితో పాటు, హెక్టారుకు 40 కిలోల నత్రజని, 40 కిలోల భాస్వరం మరియు 40 కిలోల పొటాష్ అవసరం. చివరి దున్నేటప్పుడు నేలలో సగం నత్రజని భాస్వరం మరియు పూర్తి పరిమాణంలో పొటాష్ కలపండి మరియు మిగిలిన నత్రజనిని మూడు భాగాలుగా విభజించి ప్రతి పంట తర్వాత పంటపై పిచికారీ చేయండి, ఇది ఆకుల మంచి పెరుగుదలకు సహాయపడుతుంది.

వ్యాధి మోతాదు మరియు సమయం మరియు తెగులు నియంత్రణ రసాయన ఔషధం:- ఎకరానికి 4 కిలోల ఫెర్టెరా (డుపాండ్) లేదా ఎకరానికి 2.5 కిలోల వెర్టికో (సింజెంటా) ను ఎరువుతో కలిపి వాడటం వలన 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే తెగుళ్ల నుండి రక్షణ లభిస్తుంది.

No.	Disease/ Pest	Control	Amount Per Liter of Water
1	Powdery Mildew	Sulphur	02 gm Per Liter
2	Root rot	Bavistin	02 gm Per Liter
3	Aphids	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters
4	Leaf minor	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters

నీటిపారుదల నిర్వహణ:- పాలకూర విత్తనాల అంకురోత్పత్తికి తేమ చాలా ముఖ్యం. తేమ లేకపోవడంతో, పొలాన్ని దున్నడానికి ముందు నీటిపారుదల చేయాలి. విత్తనం మొలకెత్తిన తర్వాత, వేడి వాతావరణంలో ప్రతి వారం మరియు శరదృతువు కాలంలో, ప్రతి 10 నుండి 12 రోజులకు నీటిపారుదల చేయాలి.

కలుపు నియంత్రణ:- విత్తిన 20 నుండి 25 రోజులకు కలుపు తీయాలి. కలుపు మందులను కూడా ఉపయోగించవచ్చు.

కోత:- విత్తనాలు విత్తిన ఒక నెల తర్వాత పాలకూర కోతకు సిద్ధంగా ఉంటుంది. ఆకుల పొడవు 15 నుండి 30 సెం.మీ. అయినప్పుడు. పాలకూర ఆకులను వాటి మృదువైన మరియు జ్యూసి స్థితిలో కోయాలి. ఈ విధంగా, పాలకూరను ఒక పంట నుండి 5-6 సార్లు పండించవచ్చు. కోత తర్వాత వెంటనే పాలకూర పంటను మార్కెట్‌కు పంపాలని నిర్ధారించుకోండి.

గమనిక: - పైన పేర్కొన్న సమాచారం అంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగాల ఆధారంగా ఉంటుంది. పైన పేర్కొన్న సమాచారం వేర్వేరు ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు సీజన్ కారణంగా మారవచ్చు.

ಮಾರ್ಕ್‌ಫೀಲ್ಡ್ ಹೈಬ್ರಿಡ್ ಸೀಡ್ಸ್ ಪ್ರೈ. ಲಿಮಿಟೆಡ್.
ಬಿ-3, ಹೆಚ್ಚುವರಿ ಕೈಗಾರಿಕಾ ಕಾಲೋನಿ, ಜಲ್ಹಾ, ಕಸ್ಟಮರ್ ಕೇರ್ ಮೊ. 9405782668

ಪಾಲಕ್

ವೈವಿಧ್ಯಗಳು:- ಆಲ್ ಗ್ರೀನ್, ಅರ್ಕಾ ಅನುಪಮಾ.

ಹವಾಮಾನ:- ಪಾಲಕ್‌ನ ಯಶಸ್ವಿ ಕೃಷಿಗೆ ಶೀತ ವಾತಾವರಣದ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಪಾಲಕ್ ಎಲೆಗಳು ಶೀತದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಬೆಳೆಯುತ್ತವೆ, ಆದರೆ ತಾಪಮಾನ ಹೆಚ್ಚಾದಾಗ ಅದರ ಬೆಳವಣಿಗೆ ನಿಲ್ಲುತ್ತದೆ, ಆದ್ದರಿಂದ ಪಾಲಕ್ ಕೃಷಿ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಚಳಿಗಾಲದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಲಾಭದಾಯಕವಾಗಿರುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಮಧ್ಯಮ ಹವಾಮಾನದಲ್ಲಿ ವರ್ಷವಿಡೀ ಪಾಲಕ್ ಅನ್ನು ಬೆಳೆಸಬಹುದು.

ಭೂಮಿಯ ಆಯ್ಕೆ:- ಸಾವಯವ ಗೊಬ್ಬರದಿಂದ ಸಮೃದ್ಧವಾಗಿರುವ ಫಲವತ್ತಾದ ಲೋಮಿ ಮಣ್ಣು ಪಾಲಕ್ ಕೃಷಿಗೆ ಸೂಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಆಮ್ಲೀಯ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಇದರ ಬೆಳವಣಿಗೆ ನಿಧಾನವಾಗುತ್ತದೆ. ಆದ್ದರಿಂದ, ಉತ್ತಮ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ, ಮಣ್ಣಿನ pH ಮೌಲ್ಯವು 6.0 ರಿಂದ 7.0 ರ ನಡುವೆ ಇರಬೇಕು.

ಕ್ಷೇತ್ರ ಸಿದ್ಧತೆ:- ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವ ಮೊದಲು, ಭೂಮಿಯನ್ನು 2 ರಿಂದ 3 ಬಾರಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ ಸಮತಟ್ಟಾಗಿಸಬೇಕು. ಹೊಲವನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಾಗ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಒಳಚರಂಡಿಯ ಸರಿಯಾದ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಬೇಕು, ಇದರಿಂದ ಮಳೆ ಬಂದಾಗ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ನೀರು ನಿಲ್ಲುವುದಿಲ್ಲ.

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ: - ಪಾಲಕ್ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವಾಗ, ಪರಿಸರಕ್ಕೆ ವಿಶೇಷ ಗಮನ ನೀಡಬೇಕು. ಸೂಕ್ತ ವಾತಾವರಣದಲ್ಲಿ, ಪಾಲಕ್ ಅನ್ನು ವರ್ಷವಿಡೀ ಬಿತ್ತಬಹುದು. ಪಾಲಕ್ ಬೆಳೆಯಿಂದ ಉತ್ತಮ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು, ಜನವರಿ-ಫೆಬ್ರವರಿ, ಜೂನ್-ಜುಲೈ ಮತ್ತು ಸೆಪ್ಟೆಂಬರ್-ಅಕ್ಟೋಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಬಹುದು, ಇದು ಪಾಲಕ್‌ನ ಉತ್ತಮ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ನೀಡುತ್ತದೆ.

ಬೀಜಗಳ ಪ್ರಮಾಣ: - ಒಂದು ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ನಲ್ಲಿ 30 ರಿಂದ 40 ಕೆಜಿ ಬೀಜಗಳು ಸಾಕು.

ಬಿತ್ತನೆ ವಿಧಾನ: - ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ, ಪಾಲಕ್ ಅನ್ನು ಪ್ರಸಾರ ಮಾಡುವ ವಿಧಾನದ ಮೂಲಕ ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಪಾಲಕ್ ಕೃಷಿಯಿಂದ ಹೆಚ್ಚಿನ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು, ಅದನ್ನು ಸಾಲುಗಳಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಬೇಕು. ಸಾಲುಗಳಲ್ಲಿ ಪಾಲಕ್ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲು, ಸಾಲುಗಳು ಮತ್ತು ಸಸ್ಯಗಳ ನಡುವಿನ ಅಂತರವನ್ನು ಕ್ರಮವಾಗಿ 25 ರಿಂದ 30 ಸೆಂ.ಮೀ ಮತ್ತು 20 ಸೆಂ.ಮೀ. ಇಡಬೇಕು. ಪಾಲಕ್ ಬೀಜಗಳನ್ನು 2 ರಿಂದ 3 ಸೆಂ.ಮೀ ಆಳದಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಬೇಕು, ಇದಕ್ಕಿಂತ ಆಳವಾಗಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಬಾರದು.

ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ಗೊಬ್ಬರ: - ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 20 ಟನ್ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಗೊಬ್ಬರ ಅಥವಾ ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 8 ಟನ್ ವರ್ಮಿಕಾಂಪೋಸ್ಟ್ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಅಂತಿಮ ಉಳುಮೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಪ್ರಮಾಣದ ಗೊಬ್ಬರವನ್ನು ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಸಮವಾಗಿ ಬೆರೆಸಬೇಕು. ಇದಲ್ಲದೆ, ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 40 ಕೆಜಿ ಸಾರಜನಕ, 40 ಕೆಜಿ ರಂಜಕ ಮತ್ತು 40 ಕೆಜಿ ಪೊಟ್ಯಾಶ್ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಅಂತಿಮ ಉಳುಮೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಅರ್ಧದಷ್ಟು ಸಾರಜನಕವನ್ನು ರಂಜಕದೊಂದಿಗೆ ಮತ್ತು ಪೂರ್ಣ ಪ್ರಮಾಣದ ಪೊಟ್ಯಾಶ್‌ನೊಂದಿಗೆ ಬೆರೆಸಿ ಉಳಿದ ಪ್ರಮಾಣದ ಸಾರಜನಕವನ್ನು ಮೂರು ಭಾಗಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿ ಪ್ರತಿ ಕೊಯ್ಲಿನ ನಂತರ ಬೆಳೆಗೆ ಸಿಂಪಡಿಸುವುದರಿಂದ ಎಲೆಗಳ ಉತ್ತಮ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಸಹಾಯವಾಗುತ್ತದೆ.

ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣದ ಡೋಸೇಜ್ ಮತ್ತು ಸಮಯ ರಾಸಾಯನಿಕ ಔಷಧ:- ಎಕರೆಗೆ 4 ಕೆಜಿ ಫೆರ್ಟೆರಾ (ಡುಪಾಂಡ್) ಅಥವಾ 2.5 ಕೆಜಿ ವರ್ಟೆಕೊ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) ಅನ್ನು ಗೊಬ್ಬರದೊಂದಿಗೆ ಎಕರೆಗೆ ಬಳಸುವುದರಿಂದ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ರಸ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ.

No.	Disease/ Pest	Control	Amount Per Liter of Water
1	Powdery Mildew	Sulphur	02 gm Per Liter
2	Root rot	Bavistin	02 gm Per Liter
3	Aphids	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters
4	Leaf minor	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters

ನೀರಾವರಿ ನಿರ್ವಹಣೆ:- ಪಾಲಕ್ ಬೀಜಗಳ ಮೊಳಕೆಯೊಡೆಯಲು ತೇವಾಂಶ ಬಹಳ ಮುಖ್ಯ. ತೇವಾಂಶದ ಕೊರತೆಯಿದ್ದರೆ, ಹೊಲವನ್ನು ಉಳುಮೆ ಮಾಡುವ ಮೊದಲು ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಬೇಕು. ಬೀಜ ಮೊಳಕೆಯೊಡೆದ ನಂತರ, ಬಿಸಿ ವಾತಾವರಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ವಾರ ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯವಿರುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಶರತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಪ್ರತಿ 10 ರಿಂದ 12 ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಬೇಕು.
ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ:- ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 20 ರಿಂದ 25 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಕಳೆ ತೆಗೆಯಬೇಕು. ಕಳೆನಾಶಕಗಳನ್ನು ಸಹ ಬಳಸಬಹುದು.

ಕೊಯ್ಲು:- ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಿದ ಸುಮಾರು ಒಂದು ತಿಂಗಳ ನಂತರ ಪಾಲಕ್ ಕೊಯ್ಲಿಗೆ ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತದೆ. ಎಲೆಗಳ ಉದ್ದವು 15 ರಿಂದ 30 ಸೆಂ.ಮೀ. ಆದಾಗ. ಪಾಲಕ್ ಎಲೆಗಳನ್ನು ಅವುಗಳ ಮೃದು ಮತ್ತು ರಸಭರಿತ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಬೇಕು. ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ, ಪಾಲಕ್ ಅನ್ನು ಒಂದು ಬೆಳೆಯಿಂದ 5-6 ಬಾರಿ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಬಹುದು. ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಿದ ತಕ್ಷಣ ಪಾಲಕ್ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಮಾರುಕಟ್ಟೆಗೆ ಕಳುಹಿಸಲು ಮರೆಯಬೇಡಿ.

ಗಮನಿಸಿ: - ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿಭಿನ್ನ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ವಿಭಿನ್ನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುವಿನ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

মাৰ্কফিল্ড হাইব্ৰিড ছিডছ্ প্ৰাইভেট লিমিটেড। লিমিটেড।
বি-৩, অতিৰিক্ত ঔদ্যোগিক কলনী, জালনা, গ্ৰাহক সেৱা মো নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

পালেংশাক

জাত:- সকলো সেউজীয়া, আৰ্কা অনুপমা।

জলবায়ু:- কচুৰ সফল খেতিৰ বাবে ঠাণ্ডা জলবায়ুৰ প্ৰয়োজন। কচুৰ পাত ঠাণ্ডাত বেছি গজে, আনহাতে উষ্ণতা বেছি হ'লে ইয়াৰ বৃদ্ধি বন্ধ হৈ যায়, গতিকে কচুৰ খেতি মূলতঃ শীতকালত অধিক লাভজনক হয়। কিন্তু মধ্যমীয়া জলবায়ুত গোটেই বছৰটো কচু খেতি কৰিব পাৰি।

মাটিৰ নিৰ্বাচন:- জৈৱিক গোবৰেৰে সমৃদ্ধ উৰ্বৰ লোমীয়া মাটি কচু খেতিৰ বাবে উপযোগী। অম্লযুক্ত মাটিত ইয়াৰ বৃদ্ধি লেহেমীয়া হয়। গতিকে ভাল উৎপাদনৰ বাবে মাটিৰ পি এইচ মান ৬.০ৰ পৰা ৭.০ৰ ভিতৰত হ'ব লাগে।

পথাৰ প্ৰস্তুতি:- বীজ সিঁচাৰ আগতে মাটি ২ৰ পৰা ৩ বাৰ হাল বাই সমতল কৰি লব লাগে। পথাৰখন সাজু কৰাৰ সময়ত পথাৰত পানী নিষ্কাশনৰ সঠিক ব্যৱস্থা কৰিব লাগে, যাতে বৰষুণ দিলে পথাৰত পানী লগিং নহয়।

বীজ সিঁচাৰ সময়:- কচু বীজ সিঁচাৰ সময়ত পৰিৱেশৰ প্ৰতি বিশেষ গুৰুত্ব দিব লাগে। উপযুক্ত পৰিবেশত বছৰটোৰ ভিতৰত কচু সিঁচিব পাৰি। কচু শস্যৰ পৰা ভাল উৎপাদন পাবলৈ জানুৱাৰী-ফেব্ৰুৱাৰী, জুন-জুলাই আৰু ছেপ্টেম্বৰ-অক্টোবৰ মাহত বীজ সিঁচা কৰিব পাৰি, যাৰ ফলত কচুৰ ভাল উৎপাদন পোৱা যায়।

বীজৰ পৰিমাণ:- এক হেক্টৰত ৩০ৰ পৰা ৪০ কিলোগ্ৰাম বীজ যথেষ্ট।

বীজ সিঁচাৰ পদ্ধতি:- সাধাৰণতে কচু সম্প্ৰচাৰ পদ্ধতিৰে বীজ সিঁচা হয়। কিন্তু কচু খেতিৰ পৰা অধিক উৎপাদন পাবলৈ হ'লে শাৰী শাৰীকৈ সিঁচিব লাগে। শাৰী শাৰীকৈ কচু সিঁচাৰ বাবে শাৰী আৰু গছৰ মাজৰ দূৰত্ব ক্ৰমে ২৫ৰ পৰা ৩০ চে.মি. আৰু ২০ চে.মি. কচুৰ গুটি ২ৰ পৰা ৩ ছেঃমিঃ গভীৰতাত সিঁচিব লাগে, ইয়াতকৈ গভীৰত বীজ সিঁচিব নালাগে।

গোবৰ আৰু সাৰ:- প্ৰতি হেক্টৰত ২০ টন পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰৰ গোবৰ বা প্ৰতি হেক্টৰত ৮ টন ভাৰ্মিকম্পোষ্টৰ প্ৰয়োজন হয়। চূড়ান্ত হাল বোৱাৰ সময়ত সমগ্ৰ পৰিমাণৰ গোবৰ মাটিত সমানে মিহলাই ল'ব লাগে। ইয়াৰ উপৰিও প্ৰতি হেক্টৰত ৪০ কিলোগ্ৰাম নাইট্ৰজেন, ৪০ কিলোগ্ৰাম ফছফৰাছ আৰু ৪০ কিলোগ্ৰাম পটাছৰ প্ৰয়োজন হয়। চূড়ান্ত হাল বোৱাৰ সময়ত মাটিত আধা পৰিমাণৰ নাইট্ৰ'জেন মিহলাই মাটিত সম্পূৰ্ণ পৰিমাণৰ পটাছ মিহলাই বাকী থকা নাইট্ৰ'জেনক তিনি ভাগত ভাগ কৰি প্ৰতিটো চপোৱাৰ পিছত শস্যৰ ওপৰত ছটিয়াই দিব, ইয়াৰ ফলত পাত ভালকৈ বৃদ্ধি হোৱাত সহায় হয়।

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্ৰণ ৰাসায়নিক ঔষধৰ মাত্ৰা আৰু সময়:- ফেৰটেৰা (Dupond) প্ৰতি একৰত ৪ কেজি বা Vertico (Syngenta) ২.৫ কিলোগ্ৰাম প্ৰতি একৰত গোবৰৰ সৈতে ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনলৈ ৰস চুহি খোৱা কীট-পতংগৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

No.	Disease/ Pest	Control	Amount Per Liter of Water
1	Powdery Mildew	Sulphur	02 gm Per Liter
2	Root rot	Bavistin	02 gm Per Liter
3	Aphids	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters
4	Leaf minor	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters

জলসিঞ্চন ব্যৱস্থাপনা:- কচুৰ গুটিৰ অংকুৰণৰ বাবে আৰ্দ্ৰতা অতি গুৰুত্বপূৰ্ণ। আৰ্দ্ৰতাৰ অভাৱ হ'লে পথাৰত হাল বোৱাৰ আগতে জলসিঞ্চন কৰিব লাগিব। বীজ অংকুৰণৰ পিছত গৰম বতৰত প্ৰতি সপ্তাহত জলসিঞ্চনৰ প্ৰয়োজন হয় আৰু শৰতৰ বতৰত ১০ৰ পৰা ১২ দিনৰ মূৰে মূৰে জলসিঞ্চন কৰিব লাগে।
অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ:- বীজ সিঁচাৰ ২০ৰ পৰা ২৫ দিনৰ পিছত অপতৃণ কাটিব লাগে। ঘাঁহনিনাশক ঔষধো ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰি।

চপোৱা:- কচু বীজ সিঁচাৰ প্ৰায় এমাহৰ পিছত চপোৱাৰ বাবে সাজু হয়। যেতিয়া পাতৰ দৈৰ্ঘ্য ১৫ৰ পৰা ৩০ চে.মি. কচুৰ পাত কোমল আৰু ৰসাল অৱস্থাত চপাব লাগে। এইদৰে এটা শস্যৰ পৰা ৫-৬ বাৰ কচু চপাব পাৰি। কচুৰ খেতি চপোৱাৰ লগে লগে বজাৰলৈ পঠোৱাটো নিশ্চিত কৰক।

বি:দ্ৰ: - ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত কৰা হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন বতৰ, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে উপৰোক্ত তথ্য সলনি হ'ব পাৰে।

মার্কফিল্ড হাইব্রিড সিডস প্রাইভেট লিমিটেড

বি-৩, অতিরিক্ত শিল্প কলোনি, জালনা, কাস্টমার কেয়ার মো. নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

পালং শাক

জাত:- সব সবুজ, অর্ক অনুপমা।

জলবায়ু:- পালং শাক সফলভাবে চাষের জন্য ঠান্ডা আবহাওয়া প্রয়োজন। পালং শাকের পাতা ঠান্ডায় বেশি জন্মে, যেখানে তাপমাত্রা বেশি থাকলে এর বৃদ্ধি বন্ধ হয়ে যায়, তাই শীতকালে পালং শাক চাষ মূলত বেশি লাভজনক। তবে সারা বছর ধরে মাঝারি জলবায়ুতে পালং শাক চাষ করা যেতে পারে।

জমি নির্বাচন:- জৈব সার সমৃদ্ধ উর্বর দোআঁশ মাটি পালং শাক চাষের জন্য উপযুক্ত। অম্লীয় মাটিতে এর বৃদ্ধি ধীর হয়ে যায়। তাই, ভালো ফলনের জন্য, মাটির pH মান ৬.০ থেকে ৭.০ এর মধ্যে হওয়া উচিত।

ক্ষেত প্রস্তুতি:- বপনের আগে, জমি ২ থেকে ৩ বার চাষ করে সমতল করতে হবে। ক্ষেত প্রস্তুত করার সময় জমিতে নিষ্কাশনের সঠিক ব্যবস্থা করতে হবে, যাতে বৃষ্টি হলে জমিতে জলাবদ্ধতা না থাকে।

বপনের সময়:- পালং শাক বপনের সময় পরিবেশের দিকে বিশেষ মনোযোগ দিতে হবে। উপযুক্ত পরিবেশে পালং শাক সারা বছর বপন করা যেতে পারে। পালং শাক থেকে ভালো উৎপাদন পেতে জানুয়ারী-ফেব্রুয়ারী, জুন-জুলাই এবং সেপ্টেম্বর-অক্টোবর মাসে বপন করা যেতে পারে, যা পালং শাকের ভালো ফলন দেয়।

বীজের পরিমাণ:- এক হেক্টরে ৩০ থেকে ৪০ কেজি বীজ যথেষ্ট।

বপন পদ্ধতি:- সাধারণত পালং শাক ছিটিয়ে বপন করা হয়। তবে পালং শাক চাষ থেকে বেশি ফলন পেতে সারিবদ্ধভাবে বপন করা উচিত। সারিতে পালং শাক বপনের জন্য, সারি এবং গাছের মধ্যে দূরত্ব যথাক্রমে ২৫ থেকে ৩০ সেমি এবং ২০ সেমি রাখতে হবে। পালং শাকের বীজ ২ থেকে ৩ সেমি গভীরে বপন করতে হবে, এর চেয়ে বেশি গভীরে বপন করা উচিত নয়।

সার এবং সার:- প্রতি হেক্টরে ২০ টন পচা গোবর সার বা ৮ টন ভার্মিকম্পোস্ট প্রয়োজন। চূড়ান্ত চাষের সময় সম্পূর্ণ পরিমাণ সার মাটিতে সমানভাবে মিশিয়ে দিতে হবে। এছাড়াও, প্রতি হেক্টরে ৪০ কেজি নাইট্রোজেন, ৪০ কেজি ফসফরাস এবং ৪০ কেজি পটাশ প্রয়োজন। শেষ চাষের সময় মাটিতে অর্ধেক পরিমাণ নাইট্রোজেনের সাথে ফসফরাস এবং সম্পূর্ণ পরিমাণ পটাশ মিশিয়ে বাকি পরিমাণ নাইট্রোজেন তিন ভাগে ভাগ করে প্রতিবার ফসল কাটার পর ফসলে স্প্রে করুন, এতে পাতার ভালো বৃদ্ধি হয়।

রোগ ও পোকামাকড় দমনের রাসায়নিক ঔষধের মাত্রা এবং সময়:- প্রতি একরে ফেরটেরা (ডুপন্ড) ৪ কেজি অথবা প্রতি একরে ভার্টিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি সারের সাথে ব্যবহার করলে ২১ দিনের জন্য রস চুষে নেওয়া পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।

No.	Disease/ Pest	Control	Amount Per Liter of Water
1	Powdery Mildew	Sulphur	02 gm Per Liter
2	Root rot	Bavistin	02 gm Per Liter
3	Aphids	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters
4	Leaf minor	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters

সেচ ব্যবস্থাপনা:- পালং শাকের বীজ অঙ্কুরোদগমের জন্য আর্দ্রতা খুবই গুরুত্বপূর্ণ। যদি আর্দ্রতার অভাব থাকে, তাহলে জমি চাষের আগে সেচ দিতে হবে। বীজ অঙ্কুরোদগমের পর, প্রতি সপ্তাহে গরম আবহাওয়ায় এবং শরৎকালে, প্রতি ১০ থেকে ১২ দিন অন্তর সেচ দিতে হবে।

আগাছা নিয়ন্ত্রণ:- বীজ বপনের ২০ থেকে ২৫ দিন পর আগাছা দমন করতে হবে। ভেষজনাশকও ব্যবহার করা যেতে পারে।

সংগ্রহ:- বীজ বপনের প্রায় এক মাস পর পালং শাক ফসল কাটার জন্য প্রস্তুত হয়ে যায়। পাতার দৈর্ঘ্য ১৫ থেকে ৩০ সেমি হয়ে গেলে। পালং শাকের পাতা নরম এবং রসালো অবস্থায় সংগ্রহ করতে হবে। এইভাবে, এক ফসল থেকে ৫-৬ বার পালং শাক সংগ্রহ করা যায়। পালং শাক সংগ্রহের পরপরই বাজারে পাঠাতে ভুলবেন না।

বিঃদ্রঃ: - উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন আবহাওয়া, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরের তথ্য পরিবর্তিত হতে পারে।

ਮਾਰਕਫੀਲਡ ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ ਸੀਡਜ਼ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਲਿਮਟਿਡ
ਬੀ-3, ਐਡੀਸ਼ਨਲ ਇੰਡਸਟਰੀਅਲ ਕਲੋਨੀ, ਜਾਲਨਾ, ਕਸਟਮਰ ਕੇਅਰ ਮੋ. ਨੰ. 9405782668

ਪਾਲਕ

ਕਿਸਮਾਂ:- ਆਲ ਗ੍ਰੀਨ, ਅਰਕਾ ਅਨੁਪਮਾ।

ਜਲਵਾਯੂ:- ਪਾਲਕ ਦੀ ਸਫਲ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ ਠੰਡੇ ਮੌਸਮ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਪਾਲਕ ਦੇ ਪੱਤੇ ਠੰਡੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਜ਼ਿਆਦਾ ਉੱਗਦੇ ਹਨ, ਜਦੋਂ ਕਿ ਤਾਪਮਾਨ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੋਣ 'ਤੇ ਇਸਦਾ ਵਾਧਾ ਰੁਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਸਰਦੀਆਂ ਵਿੱਚ ਪਾਲਕ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਮੁੱਖ ਤੌਰ 'ਤੇ ਵਧੇਰੇ ਲਾਭਦਾਇਕ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਪਾਲਕ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਸਾਲ ਭਰ ਮੱਧਮ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਚੋਣ:- ਜੈਵਿਕ ਖਾਦ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਉਪਜਾਊ ਦੋਮਟ ਮਿੱਟੀ ਪਾਲਕ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ ਢੁਕਵੀਂ ਹੈ। ਤੇਜ਼ਾਬੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਇਸਦਾ ਵਾਧਾ ਹੌਲੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ, ਚੰਗੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਲਈ, ਮਿੱਟੀ ਦਾ pH ਮੁੱਲ 6.0 ਤੋਂ 7.0 ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਖੇਤ ਦੀ ਤਿਆਰੀ:- ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ, ਜ਼ਮੀਨ ਨੂੰ 2 ਤੋਂ 3 ਵਾਰ ਵਾਹੁਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਸਮਤਲ ਬਣਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਖੇਤ ਤਿਆਰ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਪਾਣੀ ਦੀ ਨਿਕਾਸੀ ਦਾ ਢੁਕਵਾਂ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਜੋ ਮੀਂਹ ਪੈਣ 'ਤੇ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਪਾਣੀ ਨਾ ਭਰੇ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ:- ਪਾਲਕ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ, ਵਾਤਾਵਰਣ ਵੱਲ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਢੁਕਵੇਂ ਵਾਤਾਵਰਣ ਵਿੱਚ, ਪਾਲਕ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਸਾਲ ਭਰ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਪਾਲਕ ਦੀ ਫਸਲ ਤੋਂ ਚੰਗਾ ਉਤਪਾਦਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ, ਬਿਜਾਈ ਜਨਵਰੀ-ਫਰਵਰੀ, ਜੂਨ-ਜੁਲਾਈ ਅਤੇ ਸਤੰਬਰ-ਅਕਤੂਬਰ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਪਾਲਕ ਦੀ ਚੰਗੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

ਬੀਜਾਂ ਦੀ ਮਾਤਰਾ:- ਇੱਕ ਹੈਕਟੇਅਰ ਵਿੱਚ 30 ਤੋਂ 40 ਕਿਲੋ ਬੀਜ ਕਾਫ਼ੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਤਰੀਕਾ:- ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਪਾਲਕ ਨੂੰ ਛਾਂਟ ਕੇ ਬੀਜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਪਾਲਕ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਤੋਂ ਵਧੇਰੇ ਝਾੜ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ, ਇਸਨੂੰ ਕਤਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਬੀਜਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਕਤਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਪਾਲਕ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਲਈ, ਕਤਾਰਾਂ ਅਤੇ ਪੌਦਿਆਂ ਵਿਚਕਾਰ ਦੂਰੀ ਕ੍ਰਮਵਾਰ 25 ਤੋਂ 30 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਅਤੇ 20 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਰੱਖਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਪਾਲਕ ਦੇ ਬੀਜ 2 ਤੋਂ 3 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਡੂੰਘਾਈ 'ਤੇ ਬੀਜਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ, ਬਿਜਾਈ ਇਸ ਤੋਂ ਵੱਧ ਨਹੀਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ।

ਖਾਦ ਅਤੇ ਖਾਦ:- ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ 20 ਟਨ ਸੜੀ ਹੋਈ ਗੋਬਰ ਦੀ ਖਾਦ ਜਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ 8 ਟਨ ਵਰਮੀਕੰਪੋਸਟ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਅੰਤਿਮ ਵਾਢੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਖਾਦ ਦੀ ਪੂਰੀ ਮਾਤਰਾ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਬਰਾਬਰ ਮਿਲਾਉਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ, ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ 40 ਕਿਲੋ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ, 40 ਕਿਲੋ ਫਾਸਫੋਰਸ ਅਤੇ 40 ਕਿਲੋ ਪੋਟਾਸ਼ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਆਖਰੀ ਵਾਢੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਅੱਧੀ ਮਾਤਰਾ ਵਿੱਚ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਨੂੰ ਫਾਸਫੋਰਸ ਅਤੇ ਪੂਰੀ ਮਾਤਰਾ ਵਿੱਚ ਪੋਟਾਸ਼ ਮਿਲਾਓ ਅਤੇ ਬਾਕੀ ਬਚੀ ਮਾਤਰਾ ਨੂੰ ਤਿੰਨ ਹਿੱਸਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡੋ ਅਤੇ ਹਰੇਕ ਕਟਾਈ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਫਸਲ 'ਤੇ ਸਪਰੇਅ ਕਰੋ, ਇਸ ਨਾਲ ਪੱਤਿਆਂ ਦਾ ਚੰਗਾ ਵਾਧਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਬਿਮਾਰੀ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ ਰਸਾਇਣਕ ਦਵਾਈ ਦੀ ਖੁਰਾਕ ਅਤੇ ਸਮਾਂ:- ਫਰਟੇਰਾ (ਡੂਪੌਂਡ) 4 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਂਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ ਵਰਤਣ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਰਸ ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

No.	Disease/ Pest	Control	Amount Per Liter of Water
1	Powdery Mildew	Sulphur	02 gm Per Liter
2	Root rot	Bavistin	02 gm Per Liter
3	Aphids	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters
4	Leaf minor	Super Confidor	04 ml Per 10 Liters

ਸਿੰਚਾਈ ਪ੍ਰਬੰਧਨ:- ਪਾਲਕ ਦੇ ਬੀਜਾਂ ਦੇ ਉਗਣ ਲਈ ਨਮੀ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਨਮੀ ਦੀ ਘਾਟ ਹੋਵੇ, ਤਾਂ ਖੇਤ ਨੂੰ ਵਾਹੁਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਬੀਜ ਦੇ ਉਗਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਗਰਮ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਹਰ ਹਫ਼ਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਪਤਝੜ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ, ਹਰ 10 ਤੋਂ 12 ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।
ਨਦੀਨ ਨਿਯੰਤਰਣ:- ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 20 ਤੋਂ 25 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਨਦੀਨਨਾਸ਼ਕਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵੀ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਕਟਾਈ:- ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਲਗਭਗ ਇੱਕ ਮਹੀਨੇ ਬਾਅਦ ਪਾਲਕ ਕਟਾਈ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਪੱਤਿਆਂ ਦੀ ਲੰਬਾਈ 15 ਤੋਂ 30 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਪਾਲਕ ਦੇ ਪੱਤਿਆਂ ਦੀ ਕਟਾਈ ਨਰਮ ਅਤੇ ਰਸੀਲੇ ਅਵਸਥਾ ਵਿੱਚ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ, ਪਾਲਕ ਦੀ ਇੱਕ ਫਸਲ ਤੋਂ 5-6 ਵਾਰ ਕਟਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਪਾਲਕ ਦੀ ਫਸਲ ਨੂੰ ਵਾਢੀ ਤੋਂ ਤੁਰੰਤ ਬਾਅਦ ਬਾਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚ ਭੇਜਣਾ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਓ।

ਨੋਟ: - ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਮੌਸਮ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮ ਦੇ ਕਾਰਨ ਬਦਲ ਸਕਦੀ ਹੈ।